डा० शिवानन्द ...
दर्शनशास्त्र
आर. एन. कॉलेज

सांख्य दर्शन
कार्य-कारण सिद्धान्त
सत्कार्यवाद

भारतीय दर्शन के सबसे वेदान्त-दर्शन के बाद सबसे महत्वपूर्ण सांख्य-दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल माने जाते हैं। द्वैतवादी सांख्य-दर्शन के कार्य-कारण सिद्धान्त को सत्कार्यवाद के नाम से विभूषित किया जाता है। भारतीय दर्शनों का अवलोकन करने पर कार्य-कारण वाद के विषय में मुख्य रूप से दो प्रकार के विचार मिलते हैं। प्रश्न है क्या कार्य की सत्ता उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में वर्तमान रहती है, का सांख्य का सत्कार्यवाद भावात्मक उत्तर है। सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में अव्यक्त रूप से मौजूद रहता है। दूसरा अभावात्मक उत्तर असत्कार्यवाद कहते है जिसके अनुसार कार्य की सत्ता उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान नहीं रहता है। न्याय-वैशेषिक का कार्य-कारण सिद्धान्त को असत्कार्यवाद कहते हैं जो सांख्य का विरोधी है।

सत्कार्यवाद के शाब्दिक विश्लेषण से ही अर्थ स्पष्ट होता है सत्कार्यवाद शब्द सत (existent) कार्य (effect) और वाद (theory) के संयुक्त होने से बना है। सत्कार्यवाद इस प्रकार उस सिद्धान्त का नाम हुआ जो उत्पत्ति के पूर्व कारण में कार्य की सत्ता स्वीकार करता है। कार्य और कारण में सिर्फ आकार का भेद है। कारण अव्यक्त कार्य और कार्य अभिव्यक्त कारण है। वस्तु के निर्माण का अर्थ है अव्यक्त कार्य का, जो कारण में निहित है कार्य में पूर्णतः अभिव्यक्त होना। असत्कार्यवादियों ने कार्य को अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में सत मानने पर जो आक्षेप किये हैं, सत्कार्यवाद की स्थापना उन प्रश्नों का निराकरण करके ही की गई है। न्याय-वैशेषिक असत्कार्यवाद के समर्थक हैं साथ ही बौद्ध दर्शन नाम भी इनमें है। इनके अनुसार यदि कार्य को उसकी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान माना जायेगा तब फिर कार्य

Scanned with CamScanner

कार्य कारण
सत्कार्यवाद

के अनुसार कोई भी कार्य नहीं उत्पन्न होता क्योंकि यदि इसको सच माना जाए कि कार्य कारण में ही अभिव्यक्त होता है तब कार्य कारण में भेद नहीं हो जाता है। इसके अतिरिक्त कार्य को अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान मानने पर फिर भिन्न कारण के मानने का कोई औचित्य नहीं रहेगा। अतः इस प्रकार की विचारधारा जो कारण में कार्य सत्ता को नहीं मानती असत्कार्यवाद है।

सांख्य ने असत्कार्यवाद का खण्डन करके सत्कार्यवाद का प्रतिपादन किया है। सत्कार्यवाद को सिद्ध करने के लिए सांख्य ने निम्न युक्तियाँ दी हैं :-

1. असदकरणात् :- असत्कार्यवाद के विरुद्ध सांख्य का कहना है कि यदि कारण में कार्य को असत् माना जाता है तो कितना भी प्रयत्न करने से उत्पन्न नहीं किया जा सकता है। जो असत् है उससे सत् का निर्माण असम्भव है। असत्कार्यवाद जैसे बालू में से कितना भी प्रयत्न करने पर तेल नहीं निकाला जा सकता है! अर्थात असत् से सत् को नहीं लाया जा सकता है इससे सिद्ध होता है कि कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान है।

2. विशेष कार्य का विशेष कारण से सम्बन्ध होना — साधारणतः ऐसा देखा जाता है कि विशेष कार्य के लिए विशेष कारण की आवश्यकता होती है (उपादानग्रहणात्) यह उपादान नियम है। सांख्य की दूसरी युक्ति यह भी है कि एक विशेष कार्य का एक विशेष कारण से ही सम्बन्ध होना यह सिद्ध करता है कि कार्य अपने कारण में अपनी उत्पत्ति के पूर्व विद्यमान होता है जैसे तेल भी निकलता है तेलहनों से ही न कि बालू से। इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक कार्य अपने विशेष कारण में अपनी उत्पत्ति से पूर्व ही विद्यमान रहता है।

3. - समर्थ कारण से ही अभीष्ट कार्य की प्राप्ति

[illegible]

कार्य-कारण
सत्कार्यवाद

(3)

होना - हम देखते हैं कि प्रत्येक कार्य [illegible] किसी कारण से उत्पन्न होता है और इसकी [illegible] होता है अन्यथा नहीं। जैसे [illegible] उपादान कारण है इसलिए उससे [illegible] (मक्खन) की प्राप्ति होती है। इससे [illegible] है कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में अव्यक्त अवस्था में विद्यमान रहता है।

4. असत से सत की उत्पत्ति असम्भव - सांख्य का सत्कार्यवाद के प्रतिपादन में सबसे प्रबल तर्क यह है कि यदि यह माना जाय कि कार्य वास्तव में अपने कारण में अविद्यमान रहता है तब इसका तात्पर्य है कि कार्य अपने कारण में असत् है और इस प्रकार असत् से सत् की उत्पत्ति हुई यह मानना पड़ेगा। किन्तु यह असम्भव है क्योंकि असत (शून्य) से सत् की कभी उत्पत्ति नहीं हो सकती।

5. कार्य कारण से अभिन्न है - कारणभावात् - सांख्य का यह कहना है कि कार्य और कारण वास्तव में अभिन्न हैं क्योंकि हम वास्तव में वस्तु की अव्यक्त अवस्था को कारण कह देते हैं और उसकी व्यक्त अवस्था को कार्य कहते हैं। अतः कार्य कारण एक वस्तु की व्यक्त और अव्यक्त अवस्थायें हैं, यथा कपड़ा अपने तन्तुओं से अलग नहीं होता, मेज अपनी लकड़ी से पृथक नहीं होती। सच पूछा जाय तो कारण और कार्य एक ही द्रव्य की दो अवस्थाएँ हैं। द्रव्य की अव्यक्त अवस्था को कारण तथा व्यक्त अवस्था को कार्य कहा जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि जब कारण की सत्ता है तब कार्य की सत्ता भी उसमें अन्तर्भूत है। इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में सांख्य यह मानता है कि कार्य अपनी अभिव्यक्ति से पूर्व अपने कारण में विद्यमान रहता है। इसी को सांख्य का सत्कार्यवाद कहा जाता है।

Scanned with CamScanner